|  |
| --- |
| 15. Januar 2023 |
| **02. Sonntag im Jahreskreis A** |
| Erste Lesung: Jes 49,3.5-6; Zweite Lesung:1 Kor 1,1-3; Evangelium: Joh 1,29-34 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 142, 1+2 | Zu dir, o Gott, erheben wir |
|  | GL 149, 1-3 | Liebster Jesu, wir sind hier |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 160 | Gott des Vaters ewger Sohn |
| Gloria: | GL 701 | Lasst uns Gott, dem Herrn |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 40,2 u. 4ab.7-10 |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 365 | Meine Hoffnung und meine Freude |
|  | oder Lied |  |
|  | GL 384, 3 | Hoch sei geprisen |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 175, 6 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Das Wort ist Fleisch geworden und hat unter uns gewohnt.* |
|  | *Allen, die ihn aufnahmen,* |
|  | *gab er Macht, Kinder Gottes zu werden.* |
|  |  |  |
| Credo: | GL 802 | Den Taufbund wir erneuern |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 425, 1+4+5 | Solang es Menschen gibt |
|  | GL 474, 1-4 | Wenn wir das Leben teilen |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 718 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 202 | O du Lamm Gottes |
|  | GL 498, 2+4 | Hier ist das wahre Osterlamm |
|  | GL 808, 4 | Neuer König |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL216, 1 | Im Frieden dein |
|  | GL 357, 1+2+5 | Wie schön leuchtet der Morgenstern |
|  | GL 358, 1+5 | Ich will dich lieben |
|  | GL 372, 1+2+5  | Morgenstern der finstern Nacht |
|  | GL 621, 1+3 | Vom Himmel wird als Lamm gesandt |
|  |  | Alternativmelodie: |
|  |  | GL 230 „Gott, heilger Schöpfer“ |
|  |  |  |
| Schlusslied: | GL 416, 1+3 | Was Gott tut, das ist wohlgetan |
|  | GL 435, 1+2+4 | Herr, ich bin dein Eigentum |
|  | GL 347, 2+3 | Der Geist des Herrn |
|  |  |  |